

'kghn: bu l kfu ; r

vk; rYykfgy mte k l; ;ny myek ekYkuk lO vyh udh udoh rkck l jkg

इन्हे जुरैर की रिवायत यह है कि किसी ने ख़बर उड़ा दी कि कैस बिन सअद क़त्ल हो गए। बस उस पर यह ग़दर मच गया और वह ख़ैमा जिसमें इमाम हसन^{अ०स०} का क़याम था लूट लिया गया। यहाँ तक कि जिस बिछौने पर आप थे उसे आपके नीचे से खींच लिया गया।¹

उसके बाद आप मदाएन की तरफ़ रवाना हो गए मगर वहाँ पहुंचने पर जर्ज़ह बिन कबीसा असदी ने जो उन्हीं ख़वारिज में से था कमीनगाह में छुप कर खंजर से हमला कर दिया जिससे आप ज़ख्मी हो गए अरसे तक मदाएन में इलाज के बाद आप अच्छे हुए और फिर मुआविया से मुक़ाबिला की तैयारी की।

मुआविया ने आपके पास पैग़ाम भेजा कि आप जिन शराएत पर चाहें मैं सुल्ह करने पर तैयार हूँ और उसके साथ आपकी फ़ौज के उन सरदारों के खुतूत भी रवाना कर दिये जिन्होंने खुफ़िया तरीक़े पर मुआविया से साज़ बाज़ करना चाही थी और दावत दी थी कि आप आईये तो हम हसन^{अ०स०} को गिरफ़्तार करके आपके सिपुर्द कर देंगे या उनको क़त्ल कर डालेंगे।²

इमाम हसन^{अ०स०} पहले ही अपने साथियों की ग़द्दारी से वाकिफ़ थे और इसलिए जंग को मुनासिब वक़्त ख़याल नहीं करते थे लेकिन यह ज़रूर चाहते थे कि कोई सूरत ऐसी पैदा हो कि बातिल की हिमायत का धब्बा भी मेरे

दामन पर न आने पाये। इस ख़ानदान के लोगों को हुकूमत व इक़तेदार की तो हवस कभी रही नहीं, उन्हें तो मतलब इससे था कि मख़लूक़े खुदा की बेहतरी हो और हुदूद व हुकूके इलाही का इजरा (राएज) हो। अब मुआविया ने जो आप से मुँह मांगे शराएत पर सुल्ह करने की आमादगी ज़ाहिर की तो आपने अपने नाना और बाप की देखी हुई सीरत के मुताबिक़ मसालिहत के बढ़ते हुए हाथ को नाकाम वापस नहीं किया। आपने सुल्ह के शराएत मुरत्तब करके मुआविया के पास रवाना किये। वह तमाम शराएत जिन से क़ानूनी तौर पर आईन व शरीयत का तहफ़फ़ुज़ हो जाता है। चुनानचे सुल्ह की दस्तावेज़ मुकम्मल हुई और जंग का ख़ातिमा हो गया। हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} अपने बाप की वफ़ात के बाद अपने बड़े भाई हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} के साथ उन सर्द व गर्म हालात का बराबर मुतालिआ कर रहे थे। उन्होंने उन वाक़ेयात पर कभी एक ग़ैर मुतअल्लिक़ इन्सान की तरह नज़र नहीं डाली बल्कि वह उसको अपनी सरगुज़़िशत (सानेहा) समझते थे और जानते थे कि हमें इसी हाल पर मुस्तक़िबल की इमारत को बलन्द करना है। उस वक़्त के वाक़ेयात का यह पहलू बहुत अहम था कि साथियों की कसरत और जमइयत पर एतेमाद का ख़याल कुल्लियतन दूर अज़ कार (सिरे से ग़लत है) है। हुसैन^{अ०स०} अपने वालिदे बुजुर्गवार के साथ एक दफ़ा उन साथियों के अमल को देख चुके थे कि वह उनके सामने तलवारें

¹ तबरी जि/6 पेज/92

² सही बुख़ारी जि/2 पेज/71, इरशाद पेज/195

खींच कर आ गए और अब अपने बड़े भाई के साथ साथियों के तर्ज अमल को देख लिया कि खुद अपनी फौज के हाथों किस तरह उनके भाई की जान खतरे में पड़ गई थी। मुमकिन है किसी वजह से उस वक्त हुसैन^{अ०स०} अपने बड़े भाई के पास मौजूद न हों और ऐसा ही मालूम होता है। इसलिए कि उस सख्त और नागवार मौके पर कोई तज़क़िरा इमाम हुसैन^{अ०स०} का नज़र नहीं आता मगर उन्होंने यकीनन उन हालात को दर्दमन्दाना तरीके पर सुना और उस ज़ख्म को देखा होगा जो उनके भाई के जिस्म पर खुद अपने साथ वालों में से किसी के हाथ से आ गया था और उसका असर उनके हस्सास दिल पर जितना भी हुआ हो वह कम है।

इसके अलावा आपने अपने बुजुर्गों की सीरत में एक दफ़ा यह नमूना और देख लिया कि अम्ने आलम के लिए नुक़त-ए-अव्वल सुल्ह व सलामती हैं जंग का दर्जा सुल्ह के बाद है और सुल्ह के इमकानात पैदा होने तक है इसलिए सुल्ह के ख़याल को जंग के पहले और जंग के दौरान में हमेशा पेशे नज़र रखना चाहिए। दुश्मन से सुल्ह की गुप्तगू को कभी अपनी खुद्दारी के ख़िलाफ़ न समझो चाहे जज़बाती लोग इस पर मोतरिज़ भी हों और चाहे उसके लिए तुम्हें अपने जाह व इक्तेदार राहत व आराम या किसी दूसरे शख़्सी मफ़ाद की कुर्बानी भी कर देना पड़े मगर यह ख़याल ज़रूरी है कि इस सुल्ह के अन्दर कोई ऐसा उसूल पामाल न होने पाये जिसका महफूज़ रखना बहरहाल अपना मुक़द्दस फ़रीज़ा है। यही नमूना हुसैन^{अ०स०} ने अपने नाना से देखा था, यही उनको अपने बाप के यहाँ नज़र आया और यही अब उनको अपने वाजिबुल

इताअत भाई इमाम हसन^{अ०स०} की जानिब से पेशे नज़र था।

एक बात ज़िम्नी तौर पर और दोबारा सामने आ गई। वह यह कि सच्चाई के रास्ते में अगर इतमामे हुज्जत की ज़रूरत हो तो दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन के भी इक़्रार पर भरोसा कर लेना चाहिए।

इस सुल्ह नामें के मुकम्मल शराएत जो अल्लामा इब्ने हज़र मक्की ने दर्ज किये हैं हस्बे ज़ैल हैं।³

1- यह कि मुआविया हुकूमते इस्लाम में किताबे खुदा और सुन्नते रसूल और सही रास्ते पर चलने वाले खुलफ़ा-ए-राशेदीन के तरीके पर अमल करेंगे।⁴

2- यह कि मुआविया को अपने बाद किसी ख़लीफ़ा के नामज़द करने का हक़ न होगा।

3- यह कि शाम व इराक़ व हिजाज़ व यमन सब जगह के लोगों के लिए अमान होगी।

4- यह कि हज़रत अली^{अ०स०} के असहाब और षिया जहाँ भी रहें उनके जान व माल व नामूस व औलाद महफूज़ रहेंगे।⁵

5- यह कि मुआविया हसन इब्ने अली^{अ०स०} और उनके भाई हुसैन^{अ०स०} और किसी को भी ख़ानदाने रसूल^{स०अ०} में कोई नुक़सान पहुँचाने या उनकी जान लेने की कोशिश न करेंगे। न खुफ़िया तरीके पर और न ऐलानिया और उनमें से किसी को किसी जगह धमकाया, डराया और दहशत में मुबतिला नहीं किया जायेगा। यह मुआहिदा रबीउल अव्वल या जमादिउल ऊला सन 41 हिजरी को अमल में आया।

³ सवाएके मुहरिका पेज/81

⁴ शिया माख़ज़ों (Writers) में इस शर्त के आखिरी जुज़ का ज़िक्र नहीं है।

⁵ इस शर्त के सुबूत के लिए मुलाहिज़ा हो तबरी जि/6 पेज/97

अगर गौर किया जाये तो इस सुल्ह के ज़रिये से हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} ने वह मक़सद हासिल कर लिया था जिसके लिए उनकी अपने फ़रीके मुख़ालिफ़ से (मुनाज़ेअत) लड़ाई थी।

इसमें कोई शुबहा नहीं कि यह हज़रात ज़ाती अग़राज़ (फ़ाएदों) के लिए किसी से मुख़ासिमत (दुश्मनी) नहीं रखते थे। उनकी लड़ाई जो कुछ थी वह उसूले शरीयत व मज़हब के लिए। हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} ने सुल्ह नामे की पहली शर्त के लिहाज़ से अमीरे षाम को पाबन्द बना दिया था कि वह किताब व सुन्नत के मुताबिक़ अमल करें। इससे आपने एक तरफ़ तो यह बात हमेशा के लिए मुसल्लम बना दी कि उसूले शरीयत और है आईने हुकूमत और है। यह वह बड़ी चीज़ थी जिसके लिए आले मोहम्मद बराबर कोशों रहे थे यानी कभी ऐसा न हो कि हुक्कामे इस्लाम का तर्ज़े अमल ऐने शरीयत समझ लिया जाये। दूसरा अम्र यह भी आपने साबित कर दिया बल्कि फ़रीके मुख़ालिफ़ से तस्लीम करा लिया कि अब तक जो कुछ हुकूमते शाम का रवैया रहा है वह किताब और सुन्नत के मुताबिक़ नहीं है क्योंकि हर शख्स जानता है कि सुल्हनामे की बुनियादी चीज़ें वही होती हैं जो दो फ़रीकों में बेनाए मुख़ासिमत (लड़ाई की बुनियाद) हों। अगर हुकूमते शाम का साबिका तर्ज़े अमल अब तक बराबर किताब व सुन्नत के मुताबिक़ होता तो इस शर्त की ज़रूरत क्या थी। इसके बाद दूसरी अहम शर्त यह करार दी कि उनको अपने बाद किसी को नामज़द करने का हक़ न होगा। इस तरह आपने मुसतक्बिल का तहफ़फ़ुज़ किया क्योंकि यह मुमकिन था कि मुआविया अपनी ज़िन्दगी भर किताब और सुन्नत के मुताबिक़ अमल करते लेकिन बाद

में कोई ऐसा आता जो इसके ख़िलाफ़ करता। इसलिए आपने आइन्दा के लिए जानशीन बनाने के हक़ को सल्ब (छीन) कर लिया।

बहर हाल सुल्ह हो गई। फ़ौजें वापस चली गईं और मुआविया की गिरफ़्त तमाम ममालिक इस्लामिया पर मज़बूत हो गई और अब शाम व मिस्र के साथ इराक़ व हिजाज़, यमन और ईरान वगैरह भी उनके तसरूफ़ में आ गए। हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} को इस सुल्ह के बाद अपने साथ के बहुत से लोगों की तरफ़ से इन्तेहाई दिलख़राश और तौहीन आमेज़ अलफ़ाज़ सुनना पड़े जिनका बर्दाश्त करना उन्हीं का काम था। बाज़ लोग ऐसे जो कल तक “अमीरुल मोमिनीन” कहकर तस्लीम बजा लाते थे आज “मुज़िल्लुल मोमिनीन” यानी मोमिनीन की जमाअत को ज़लील करने वाले” के अलफ़ाज़ से सलाम करते थे मगर इमाम हसन^{अ०स०} ने सब्र व इस्तेक़लाल और नफ़्स की बलन्दी के साथ इन तमाम नागवार हालात को बरदाश्त किया और मुआहिदे पर सख्ती के साथ कायम रहे लेकिन मुआविया ने जंग के ख़त्म और सियासी इक़तेदार के कायम होते ही इराक़ में दाख़िल होकर नख़ीला में जिसे कूफ़े की सरहद समझना चाहिए कायम किया। और जुमे के खुतबे के बाद यह ऐलान कर दिया कि मेरा मक़सद जंग से यह न था कि तुम लोग नमाज़ पढ़ने लगो। रोज़े रखने लगो, हज़ करो या ज़कात अदा करो। यह सब तो तुम करते ही हो। मेरा तो मक़सद जंग से फ़क़त यह था कि मेरी हुकूमत तुम पर मुसल्लम हो जाये। वह हसन^{अ०स०} के इस मुआहिदे के बाद मुकम्मल हो गई और बावजूद तुम लोगों की नागवारी के खुदा ने मुझे इस मतलब में कामयाब कर दिया। रह गए वह शराएत जो मैंने हसन^{अ०स०} के साथ किये हैं

वह सब मेरे पैरों के नीचे हैं और उनका पूरा करना या न करना मेरे हाथ की बात है।⁶ मजमे में एक सन्नाटा छाया हुआ था मगर अब किस में दम था कि वह उसके खिलाफ़ लबकुशाई (मुँह खोलना) करता।

इक़तेदारे शाही की ज़ुरअत इस नुक़्ते तक पहुँची कि कूफ़े में इमाम हसन^{अ०स०} और इमाम हुसैन^{अ०स०} की मौजूदगी में मुआविया ने हज़रत अमीर^{अ०स०} और इमाम हसन^{अ०स०} की शान में ना-सज़ा कलेमात इस्तेमाल किये। इस पर सुकूत करना एतेराफ़ व इकरार का मुरादिफ़ (बराबर) समझा जा सकता था। इसलिए फ़ौरन इमाम हुसैन^{अ०स०} जवाब देने के लिए खड़े हो गए मगर हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} ने आपको बिठा दिया और खुद खड़े होकर निहायत मुख़्तसर और जामे अलफ़ाज़ में अमीरेशाम की तक़रीर का जवाब दिया।⁷ हुसैन^{अ०स०} जानते तो पहले ही थे मगर उस वक़्त महसूस कर लिया था कि हालात की रफ़्तार क्या है और हम को इसका आख़िरी मुक़ाबिला किस तरह करना होगा। मगर वह जल्दबाज़ इन्सान न थे, न वह ज़िम्मेदारियों के महल से ना-वाकिफ़ थे। इन्हीं सब्र आज़मा इन्तेज़ार के साथ हालात की तदरीजी रफ़्तार (धीरे धीरे) के दोश ब-दोश अपने किरदार की मन्ज़िल को आगे बढ़ाना था और उसके पहले एक फ़र्ज़ शनास इन्सान की तरह अपने भाई के साथ वक़्त की मौजूदा साकिन मगर पुर इज़्तिराब (बेचैनी) ख़ामोशी में गर्क रहना था।

हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} ने उमूरे सलतनत से किनारा कशी इख़्तियार करने के बाद कूफ़े का क़याम तर्क करके फिर से मदीने में जाकर सुकूनत इख़्तियार फ़रमाई तो हुसैन^{अ०स०} ने भी भाई का साथ दिया और मदीने में जाकर

क़याम फ़रमाया। मगर इस इत्तेहादे अमल के बावजूद भी बनी उमय्या ने यह ग़लत शोहरत दी कि इस सुलह के बारे में हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} और इमाम हुसैन^{अ०स०} दोनों भाईयों की यक़जेहती (एकता) में वाक़ई कोई फ़र्क़ आ जाये मगर उनके तमाम तवक्कुआत (अन्देशे) बिल्कुल ग़लत साबित हुए।

इमाम हुसैन^{अ०स०} कौल, अमल और मसलक में अपने भाई इमाम हसन^{अ०स०} के साथ बिल्कुल मुत्तहिद थे और हमेशा रहे। आपको मालूम था कि इमाम हसन^{अ०स०} ने अगरचे इतमामे हुज्जत के लिए ख़ामोशी और गोशा नशीनी इख़्तियार कर ली है मगर ख़याल इनका भी यही है कि आख़िर में फिर तलवार दरमियान में आयेगी और आख़िरी फ़ैसला बग़ैर एक सख़्त और मुशकिल अक़दाम के न हो सकेगा और वह इसके लिए तय्यार भी हैं ब-शर्तेकि हालात की तदरीजी (धीरे धीरे) रफ़्तार इन्हीं के दौरे हयात में इस आख़िरी नुक़्ते तक पहुँच जाये। जो इस आख़िरी इक़दाम के लिए ज़रूरी है। इमाम हसन^{अ०स०} अक्सर यह अशआर ब-तौरै तम्सील (मिसाल) पढ़ा करते थे।

euvkt fcLlfQ vdkk QjIrg
ekru vyk vtfyu vkvk'k eUr lQk
ykrjdcI lgy bUuLlgy eQfInk
yurnjdy eftn gRrk rjdcvk vukQk

“जो तलवार को अपना पुश्त पनाह बनाये वह अजीब सुकून व इतमिनान हासिल करेगा या दुनिया से जल्द ही गुज़र जाना और या ज़िन्दगी ऐसी जो दाद रसी के साथ हो। कभी सहूलत पसन्दी से काम न लो। सहूलत पसन्दी बड़ी ख़राबी की बात है। इज़्ज़त हासिल कर ही नहीं सकते जब तक कि दुशवार गुज़ार मन्ज़िल को तय न करो।”⁸

⁸ किताबुल-बिलदान ले-इब्नुल फ़िक्हीह अल-हम्दानी तबअ लीदन पेज/53

⁶ इरशाद पेज/196

⁷ इरशाद पेज/196

रह गये मौजूदा हालात, उनके लिहाज़ से इमाम हुसैन^{अ०स०} भी इस सुल्ह से मुत्तफ़िक़ थे चुनौनचे ब—रिवायत दीनवरी जब हुज़्र बिन अदी और उबैदा बिन अम्र जो सुल्ह के मुआमले में एख़तेलाफ़ रखते थे इमाम हुसैन^{अ०स०} के पास आये और कहा: आप लोगों ने इज़्ज़त के बदले में ज़िल्लत को ख़रीद लिया। कम हुकूक हासिल करके बहुत से हुकूक से दस्तकशी (हाथ खींचना) कर ली। अच्छा अब आप ब—ज़ाते खुद आज हमारी एक बात मान लीजिये फिर कभी कोई बात न मानियेगा। वह यह है कि आप हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} को तो इस सुल्ह के रास्ते पर जो उन्होंने इख़्तियार किया है छोड़ दीजिये। लेकिन आप अपने साथियों को जो कूफ़े में या कूफ़े के बाहर हैं, जमा कीजिये और हम दोनों को मुक़द्दमतुल जैश (थोड़ा लश्कर जो बड़ी फौज के आगे चले) का अफ़सर बना दीजिये। फिर देखियेगा कि मुआविया को ख़बर भी न होगी और हम अचानक तलवारें मारते हुए नज़र आयेंगे। हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} ने फ़रमाया: यह नहीं हो सकता। हम अहेद कर चुके और कौल व करार हो चुका। इसी तरह अली बिन मोहम्मद बिन बशीर हमदानी का बयान है कि मैं सुफ़ियान बिन अबी लैला की मर्इयत में मदीना पहुँचा और इमाम हसन^{अ०स०} के पास मिलने गया। आपके पास उस वक़्त मुसय्यब बिन नुजबा, अब्दुल्लाह बिन दवाक़ तमीमी और सिराज बिन मालिक ख़शई मौजूद थे। मैंने कहा: अस्सलामु अलैका या मुज़िल्लुल मोमिनीन। सलाम हो आपको ऐ मोमिनीन को ज़लील करने वाले।” आपने फ़रमाया: व अलैकस्सलाम। बैठो मैं मोमिनीन की ज़िल्लत का बाइस नहीं हूँ। मैंने तो उनकी इज़्ज़त रख ली और उनको खूँरेज़ी से बचा लिया। मैं देख रहा था कि अब

जंग का जोश और वलवला बाकी नहीं है और कमज़ोरी नुमायाँ है। मैं देख रहा था कि अगर जंग जारी रखी गई तब भी एक दिन यही होना है कि मुआविया की बादशाहत कायम हो जाये।” अब यह लोग हज़रत के पास से उठकर इमाम हुसैन^{अ०स०} के पास गए और पूरी गुप्तगू हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की बयान की। आपने फ़रमाया सच कहा अबू मोहम्मद (हज़रत हसन^{अ०स०}) ने। तुम्हें लाज़िम है कि हर शख्स तुम में से ख़ामोश होकर घर में बैठ जाये और बैठा रहे उस वक़्त तक कि जब तक यह शख्स (मुआविया) जिन्दा है।⁹

यह आख़िरी फ़िक़रा दर हकीकत बड़ा दूर रस था। आप समझते थे कि मुआहिदे की पाबन्दी नहीं होगी और आप जानते थे कि यह मुआहिदा मौत की आख़िरी हिचकी उस वक़्त लेगा जब मुआविया दुनिया से जाने लगेंगे। और अपने बाद जानशीन नामज़द कर जायेंगे। वह वक़्त होगा जब हमारी जानिब से कोई दूसरा इक़दाम किया जाये। आइन्दा चल कर दुनिया को हुसैन^{अ०स०} के तदब्बुर की दाद देना पड़ेगी जिन्होंने बीस बरस पहले यानी सन 41 हिजरी की तस्वीर अपनी आँख से देख ली और हुसैन^{अ०स०} की पेश बीनी अईन्दा चलकर हर्फ़ ब—हर्फ़ पूरी हो कर रही।

इस मुआहिदे के बाद अब बनी उमैया की कूव्वत बहुत मुस्तहक़म हो गई थी। उनके रास्ते में जो एक ख़रख़ा (रुकावट) था वह बिल्कुल दूर हो गया था। और इन्हें अपनी स्कीम को पूरा करने का पूरा मौका मिल गया था। चुनौनचे जितनी शर्तें हुई थीं सबकी मुख़ालिफ़त की गई और किसी एक पर भी अमल न हुआ।¹⁰

⁹ अख़बारुत्तवाल पेज / 222

¹⁰ तबरी जि / 6, पेज / 93

पहली शर्त यह थी कि किताबे खुदा और सुन्नते रसूल^{स०अ०} पर अमल होगा। यह शर्त मुसलमानों के किसी फ़िर्के के नज़दीक भी पूरी नहीं हुई। शियों का अकीदा तो इस बारे में ज़ाहिर है और अहले सुन्नत के नुक़त-ए नज़र से हज़रत रसूल अल्लाह^{स०अ०} की वफ़ात के बाद सिर्फ़ तीस बरस तक ख़िलाफ़ते राशिदा रही है और यह तीस बरस की मुद्दत ख़त्म हो जाती है। हज़रत इमाम हसन^{अ०स०} की सुलह पर। उसके बाद मुलूकियत व जहाँबानी और दुनिया दारी है, ख़िलाफ़ते राशिदा नहीं है। अगर यह शर्त पूरी हुई होती कि किताबे खुदा और सुन्नते रसूल^{स०अ०} पर अमल हो तो कोई वजह न थी कि मुआविया की हुकूमत ख़िलाफ़ते राशिदा के हुदूद से ख़ारिज होती। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ तक के बारे में यह कहा गया है कि उनका ज़माना ख़िलाफ़ते राशिदा से मिलता जुलता है मगर फ़ासिला होने की वजह से इसमें महसूब (शुमार) नहीं हुआ। मगर मुआविया के दौरे हुकूमत के मुतअल्लिक किसी ने यह राय ज़ाहिर नहीं की। मालूम हुआ कि तमाम मुसलमानों के नज़दीक इस शर्त पर अमल नहीं हुआ। इसके अलावा वाक़ेआत से भी यही ज़ाहिर होता है। इसकी चन्द मिसालें ज़ैल में दर्ज की जाती हैं।

इनमें से एक बात थी सियासी मसालेह (Adviser) की बिना पर ज़ियाद बिन सुमय्या को अपने बाप का नाजाएज़ फ़रज़न्द बना कर अपना भाई करार देना हालाँकि इस्लाम में नाजाएज़ फ़रज़न्द को नसब में शरीक नहीं किया गया है। तफ़सील इसकी यँ है कि ज़ियाद पहले ज़ियाद बिन उबैद कहलाता था क्योंकि उसकी माँ सुमय्या एक सक़फी कबीले वाले शख्स के गुलाम उबैद की ज़ौजियत में

थी और यह खुद हारिस बिन कल्दा की कनीज़ थी। हारिस ने इसको आज़ाद कर दिया तब इसके यहाँ ज़ियाद पैदा हुआ और इसलिए ज़ियाद गुलामी से ख़ारिज रहा और बढ़ा तो बड़ा समझदार और ज़हीन और अक्लमन्द और अदीब देखा गया। मुगीरा बिन शअ्बा जब ख़लीफ़-ए-दुवुम की तरफ़ से बसरा के हाकिम हुए तो वह ज़ियाद को अपने साथ बसरा ले गए और वहाँ उसे लिखना पढ़ना सिखलाया। जब हज़रत अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} ख़लीफ़ा हुए तो आपने ज़ियाद को सरज़मीने फ़ारस का गवर्नर बनाया। आपकी शहादत के बाद मुआविया ने ज़ियाद को एक तहदीद आमेज़ (धमकाने वाला) ख़त लिखा जिस पर ज़ियाद ने मज्म-ए-आम में खुत्बा पढ़ा और कहा कि जिगर ख़्वारा का लड़का और निफ़ाक़ का मरकज़ और दुश्मनाने इस्लाम का सरदार मुझे डराना चाहता है? हालाँकि मेरे और उसके दरमियान रसूल अल्लाह^{स०अ०} के चचाज़ाद भाई (इब्ने अब्बास) और हसन बिन अली^{अ०स०} नव्वे हज़ार अपने शियों की फौज लिये हुए मौजूद हैं। खुदा की क़सम अगर उसने इधर का रूख़ किया तो वह देखेगा कि मैं तलवार लिये हुए सामने मौजूद हूँगा और बड़ी शदीद जंग करूँगा। मुआविया को मालूम हो गया कि उस शख्स को धमकियों से मुतअस्सिर नहीं किया जा सकता। जब इमाम हसन^{अ०स०} ने सुल्ह फ़रमाई और मुआविया की सलतनत मज़बूत हो गई तो ज़ियाद इस्तख़र (फ़ारस का क़िला) में क़िला बन्द हो गया।¹¹ मुआविया ने उसे अमान नामा लिखा कि तुम मेरे पास आ जाओ। जो कुछ तुम कहोगे वह मैं तुम्हें दूँगा। चुनौतिये ज़ियाद, मुआविया के पास आया और मुआविया की बारगाह में उसका

¹¹ तबरी जि/6, पेज/97

रसूख बढ़ता चला गया। यहाँ तक कि सन 44 हिजरी में मुआविया ने उसे अपना भाई ज़ाहिर किया।¹² ज़ाहिर है कि एक ऐसा शख्स जिसके असली बाप का पता न हो और हो भी तो वह एक गुलाम के सिवा कोई न हो वह एक दम शहनशाहे वक्त्त का भाई बन जाये इससे बढ़कर उसकी इज़्ज़त क्या हो सकती है। मुआविया ने कहा: यह मेरे बाप अबूसुफियान के नुत्फ़े से है और उसकी गवाही किसने दी? अबू मरयम सलूली ने जो कब्ले इस्लाम ताएफ़ में षराब बेचता था। उसने कहा कि अबू सुफियान मेरे शराब खाने में आया और मुझसे एक इस किस्म की औरत को बुला देने को कहा जो उस रात में उसकी दिलचस्पी का बाइस हो। मैंने सुमय्या को उसके पास बुला दिया और इस तरह अबू सुफियान और सुमय्या में तअल्लुकात नाजाएज़ पैदा हुए और उन तअल्लुकात से ज़ियाद की विलादत हुई। एक शख्स ने कबील—ए—बनी मुसतलक में से जिसका नाम यज़ीद था गवाही दी की मैंने अबू सुफियान को यह कहते सुना था कि ज़ियाद मेरे नुत्फ़े से है। हालाँकि पहले ज़ियाद ने कूफ़े में आकर वहाँ के लोगों से यह ख्वाहिश की थी कि तुम मुआविया के साथ मेरी कराबत के लिए गवाही दे दो। उन सबने इन्कार किया कि हम झूठी गवाही न देंगे। यहाँ से मायूस होकर वह बसरा गया और वहाँ एक शख्स गवाही देने के लिए तय्यार हो गया।¹³ इस सुबूत को काफ़ी समझा गया और ज़ियाद मुआविया के भाई करार पा गए। इस बात से मुसलमानों में और बिल—खुसूस सहाबा के तब्के में बड़ी बेचैनी पैदा हुई क्योंकि पैगम्बरे इस्लाम^{स0अ0} का यह इरशाद मुतवातिर

¹² अल बुज़रा वल किताब पेज/17

¹³ तबरी जि/6, पेज/122

तौर पर सबको मालूम था कि “vyony Qjk'k oyevkfgy gt j” यानी “बच्चा अस्ली शौहर की तरफ़ मन्सूब होगा और ज़ानी के लिए बस पत्थर हैं।” मगर इक्तेदारे हुकमत के कान अवाम की चीख़ पुकार सुनने से बालातर होते हैं। उन्होंने कोई परवा नहीं की। उनके लिए इससे बढ़कर और क्या हो सकता है कि इस ज़रिये से उन्होंने ज़ियाद और उसकी औलाद को हमेशा के लिए ख़रीद लिया।

चुनानचे जब ज़ियाद के ज़रा सर उठाने का अन्देशा पैदा होता तो यह एहसान याद दिला कर उसको सर झुकाने पर मजबूर कर दिया जाता था जैसा कि एक मरतबा जबकि ज़ियाद बहुत से तहाएफ़ लेकर मुआविया के पास आया जिनमें जवाहरात का एक निहायत नफीस गुलूबन्द भी था और मुआविया उसको देखकर बहुत खुश हुए तो ज़ियाद ने ब—तौरे फ़ख़ कहना शुरू किया। हुज़ूर देखिये मैंने आपके लिए किस तरह इराक़ को पामाल कर दिया है और किस तरह वहाँ के चप्पे चप्पे पर आपका तसल्लुत कायम कर दिया है और वहाँ की हर लज़्ज़त व नेअमत आपके कदमों पर लाकर डाल दी है। यह सुनकर मुआविया अभी कुछ कहने न पाये थे कि यज़ीद बोल उठा। तुमने यह सब कुछ किया तो कमाल क्या किया? हमने जो तुम को कबील—ए—सकीफ़ की गुलामी से निकाल कर कुरैशी होने की इज़्ज़त दे दी और उबैद की फ़रज़न्दी के बजाये अबू सुफियान की फ़रज़न्दी का शरफ़ अता कर दिया और दफ़तर में क़लम की घिस घिस से ऊँचा करके मिम्बरों की बलन्दी नसीब कर दी।¹⁴

“cfd;k iit u0]]]]]]]]]]”

¹⁴ तबरी जि/6, पेज/123

है? वजह ये है कि हर एक का ज़मीर उसकी अक्ल व फ़िक्र के फ़ैसले की पैरवी कर रहा है। ज़ाहिर है कि हकीकत दो मुख़्तलिफ़ सिमतों में नहीं हो सकती। यकीनन इन दोनों मसलकों में से कोई एक या दोनों नुक्तए सेहत से हटे हुए हैं, किसी गिरोह की कुव्वत फ़ैसले से चूक हो गई है। इसी चूक ने ज़मीर को भी ग़लत रास्ते पर ग़ामज़न बना दिया है।

4&jokflek vknkr l t.ehj dk rvYyd

माहौल और आम रवासिम व आदात भी ज़मीर के रुजहानात पर असर अंदाज़ होते हैं अक्सर औकात बहुत सी ग़लत बातें समाज का जुज़ बन जाती हैं। उनके उमूमी रवाज की वजह से उनका वाकई और हकीक़ी नक्स आंखों से ओझल हो जाता है। इस किस्म के कामों के अंजाम देने के बाद बहुत कम लोग मिलेंगे जिनका ज़मीर बेचैनी महसूस करे। इक्का-दुक्का आदमी दस्तयाब हो सकते हैं जिनकी अक्ले फ़ितरी के हाथ पाओं ने रवासिम व आदात की ज़न्जीरों को तोड़ डाला और उन्हें सौ फ़ीसदी सही और आज़ाद फ़ैसला करने पर क़ादिर बना दिया है। मसलन जो लोग जानवरों को ज़िबहा करना, उनका गोश्त खाना मज़हबी तौर पर ममनू समझते हैं किसी जानवर के गले पर छूरी चलना या उसका गोश्त खाना उनके ज़मीर को बेचैन कर देता है, उसके बर ख़िलाफ़ मुसलमानों के माहौल में यह बातें उमूमन राइज हैं और उन्हें उनसे कोई ना गवारी महसूस नहीं होती।

यह दुरुस्त है कि हमारे बाज़ बरादराने वतन का यह ख़याल सही नहीं है। किसी हैवान के लिए इससे बढ़कर क्या कमाल हो सकता है कि वह अपने से बलंदतर मख़लूक के जिस्म का जुज़ बन जाए, जिस तरह ख़ाक के ज़र्रे

नबातात का जुज़ बनते, जिस तरह नबातात हैवानात का जुज़ व जिस्म क़रार पाते हैं, उसी तरह जानवर अगर अपनी मौजूदा सतहे वुजूद से मुन्तक़िल होकर किसी बालातर सतहे वुजूद तक पहुंचे तो क्या क़ाबिले ऐतेराज़ बात है। यह वही क़ानूने तकामुल है जो सारे जहाने आफ़रीनिश में नाफ़िज़ व राएज है। लेकिन अगर बिलफ़र्ज बरादराने वतन के इस तर्ज़े फ़िक्र को सही मान लिया जाए तो जानवरों के साथ हमारे बर्ताव से हमारे ज़मीरों के बेचैन न होने की वजह सिवाए इसके और क्या हो सकती है कि मुसलमानों के समाज में यह बर्ताव राएज हो गया है। आम तौर से कहा जाता है कि जब कोई बुरी बात समाज में दाख़िल हो जाए तो इसकी बुराई कम हो जाती है इसका मतलब यही है कि ऐसे पस्त समाज में रहने की वजह से हमारा ज़मीर इस पस्ती का आदी बन गया। इसकी कुव्वते फ़ैसला ज़ंग आलूद, उसकी चश्मे बसीरत कमज़ोर हो गई।



¼cfd;k i:t u0 11 dk]]]]]]¼

ज़ाहिर है यज़ीद ऐसे नौ उम्र की ज़बान से ज़ियाद ऐसे सिन रसीदा का इन अल्फ़ाज़ को सुनकर बर्दाश्त करना एहसासे कमतरी ही का नतीजा था जो नसबी एतेबार से उसमें मौजूद थी। फिर इस सूरत में ज़ियाद की नस्ल अब कभी मुआविया या उनके बाद यज़ीद के मुक़ाबले में सरताबी की कहाँ हिम्मत रख सकती थी। यह दूर रस असर था उस सियासी इक़दाम का जो ज़ियाद को भाई बनाकर किया गया था। चाहे शरीयत इस पर कितनी भी सरज़निश का मुस्तहक़ क़रार देती हो।